इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

बिहार में हुए जनजातीय विद्रोह

- वर्ष 1765 में मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय द्वारा अंग्रेजो को बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा की दीवानी प्रदान की गई। अधिक लाभ व राजस्व कमाने के उद्देश्य से उनके द्वारा जनजातीय क्षेत्रों में भी हस्तक्षेप किया गया। साथ ही बाहरी लोगों (यथा- जमींदारों, सूदखोर महाजनों, ठेकेदारों आदि) का हस्तक्षेप हुआ जिन्हें 'दिकु' कहा गया। इनके हस्तक्षेप से जनजातियों का पारंपरिक अधिकार (खूंटकटी व्यवस्था) जनजातीय, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा राजनीतिक संरचनाएँ प्रभावित हुए। इनके द्वारा जनजातियों का विभिन्न तरीकों से शोषण एवं दमन किया गया, जिससे उनमें विद्रोह का आविर्भाव हुआ।
  इस प्रकार औपनिवेशिक शासन की स्थापना के उपरांत अलग-अलग कालखण्ड एवं समायोजित जनजातीय विद्रोहों का उद्‌भव हुआ।
- **तमाड़ विद्रोह** :- यह विद्रोह वर्ष 1782-1820 ई० तक अंग्रेजों एवं नागवंशी शासकों के शोषण के विरोध स्वरूप छोटानागपुर के तमाड़ क्षेत्रों में कई चरणों में हुआ।
  इस विद्रोह के प्रमुख नेतृत्वकर्ता ठाकुरनाथ भोलानाथ सिंह, विष्णु मानकी एवं मौजी मानकी, हदन मुण्डा व करा मुण्डा आदि थे।
- **चेरों विद्रोह** :- यह विद्रोह चेरो जनजाति ने ज्यादा कर वसूली एवं उपाश्रित पट्टों के पुनः अधिग्रहण के खिलाफ 1800-1819 ई० तक चेरों जनजाति के नेतृत्वकर्ता भूषण सिंह के नेतृत्व में झारखण्ड के पलामू क्षेत्रों में किया गया। इस विद्रोहों का दमन वर्ष 1802-05 ई० में कर्नल जींस द्वारा किया गया। पुनः 1809 ई० में अंग्रेजों द्वारा जमींदारी पुलिस बल का गठन किया गया।
  चेरों राजा चुड़ामन राय द्वारा बकाया कर चुका पाने में असमर्थता के कारण इनके राज्यों को नीलाम कर दिया।
  अंग्रेजों ने 1815 ई. में इस राज्य को देवों के राजा घनश्याम सिंह को बेच दिया।
  1819 ई. में चेरो जनजाति ने अंग्रेजों एवं घनश्याम सिंह के विरुद्ध विद्रोह किया, जिसका अंग्रेजों ने पुनः दमन कर दिया।
- **हो विद्रोह** :- हो जनजाति के द्वारा 1820-1821 में छोटानागपुर के सिंहभूम के क्षेत्रों में विद्रोह हुआ। हो लोगों के निवास स्थान को 'हो देशम' या 'कोल्हान' कहा गया।
  चाइबासा के निकट शेरों नदी के तट पर हो जनजाति और अंग्रेजो के मध्य युद्ध में अंग्रेज विजयी हुए। कर्नल रिचर्ड ने विद्रोह का दमन किया।
- **कोल विद्रोह** :- औपनिवेशिक शासन एवं जमींदारों द्वारा जबरन अफीम की खेती हेतु जनजातियों को प्रताड़ित किया और लगान की ऊँची दरें न चुका पाने की स्थिति में भूमि से मालिकाना हक की समाप्ति पर 1813 ई. में दिकुओं के आर्थिक शोषण के कारण **कोल विद्रोह** का प्रस्फुटन हुआ।
  सोनपुर परगना के शिधराय मानकी के 12 गांती की जमीन छीनकर सिक्खों को दे दिया गया। जनजातिय महिलाओं को उत्पीड़ित किया गया।
  इन घटना के परिणामस्वरूप सिंगराय एवं सुर्गा मुण्डा के नेतृत्व में विद्रोह किया गया। सिली निवासी बुद्धो भगत को विद्रोह के दौरान कैप्टन इम्पे ने मारा था ।
  कैप्टन विलिंक्सन ने रामगढ़, बनारस, बैरकपुर, दानापुर तथा गोरखपुर में विद्रोह का दमन करने का प्रयास किया गया।
- **भूमिज विद्रोह** :- इस विद्रोह का आरंभ 1832-33 में गंगा नारायण सिंह के नेतृत्व में मुख्यतः वीरभूम और सिंहभूम के क्षेत्र में हुआ।
  विद्रोह का मुख्य कारण स्थानीय व्यवस्था पर कंपनी व्यवस्था को अध्यारोपित किया जाना था। 7 फरवरी 1833 ई. को खरसावां के ठाकुर चेतन सिंह ने गंगा नारायण का सर काटकर अंग्रेज अधिकारी कैप्टन विलिंक्सन को दिया । परिणामस्वरूप 1833 ई. में रेगुलेशन प्रशा के तहत शासन प्रणाली में व्यापक परिवर्तन किया गया।

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

- **संथाल विद्रोह :** संथाल 'दामन-ए-कोह' नामक क्षेत्र में निवास करने वाले आदिवासी थे। 1855-56 ई. में संथाल विद्रोह सर्वाधिक उग्र था। इसे 'संथाल टूल' के नाम से भी जाना जाता था।
- **हूल का शाब्दिक अर्थ :-** विद्रोह / बगावत
  दरअसल संथाल जनजाति विद्रोह करते वक्त 'हूल-हूल' चिल्लाते थे, जिसके चलते इसे संथाल टूल की संज्ञा दी गई।
  इस विद्रोह का नेतृत्व - सिद्धू, कान्हू, चादे एवं भैरव ने किया था। यह विद्रोह मुख्यत: पश्चिम बंगाल के वर्धमान से लेकर बिहार के भागलपुर जिला तक विस्तृत था ।
- **ताना भगत विद्रोह:-** यह विद्रोह 1914-20 के मध्य राँची तथा पलामू क्षेत्र में विस्तृत था। आंदोलन का नेतृत्व मांडा क्षेत्र में शिबु भगत, घाघरा में बलराम भगत, विशुनपुर में भिक्षू भगत ने किया ।
  सिसई थाने की देवमनिया नामक महिला ने इस आंदोलन में सराहनीय भूमिका निभायी।
  1916 ई. में जतरा भगत को गिरफ्तार कर 1 वर्ष की सजा दे दी गई।
  धार्मिक आंदोलन के रूप में प्रारंभ यह आंदोलन बाद में राजनीतिक आंदोलन में परिवर्तित हो गया।
- **मुण्डा विद्रोह :** मुण्डा विद्रोह खुंटकुरी के अधिकारों का उल्लंघन औपनिवेशिक शोषण की नीतियों के विरुद्ध 1899-1900 ई. में बिरसा मुण्डा के नेतृत्व में मुख्यत: राँची एवं सिंहभूम के क्षेत्रों में विद्रोह हुआ। मुण्डा विद्रोह को उत्गुलान (महान हलचल) विद्रोह भी कहा जाता है। 1900 ई. में राँची के सेन्ट्रल जेल में बिरसा मुण्डा की मृत्यु हो गई।

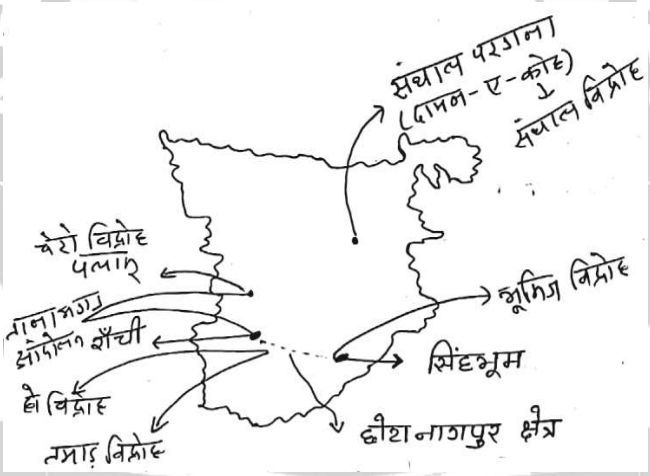

इन सभी विद्रोहों में बाहरी लोगों (दिकुओं) द्वारा उनके 'जल, जंगल, जमीन' में हस्तक्षेप ही विद्रोह का मुख्य कारण रहा। साथ ही जनजातियों में शिक्षा का प्रसार एवं ईसाई मिशनरियों के माध्यम से नए आदर्शों और विचारों के प्रसारण की भी प्रमुख भूमिका रही।

- **जनजातीय विद्रोहों के प्रमुख कारण:**
  - औपनिवेशिक - भू-राजस्व प्रणाली (स्थायी बंदोबस्त, महालवाड़ी, रैयतवाड़ी)।
  - जनजातियों के सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक व्यवस्था में अंग्रेजों एवं दिकुओं का प्रवेश (छूटकरी व्यवस्था) ।
  - भू-राजस्व की उच्च वसूली के निर्मम तरीके ।
  - ऋण न चुकाने पर विभिन्न तरीकों से शोषण ।
  - जबरन धर्मांतरन ।
  - प्राकृतिक संसाधनों/जंगल के अधिकार से बेदखली ।
  - जनजातीय पक्षों को अनसुना करना ।

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

✦ **जनजातीय विद्रोहों की प्रकृति :-**

जनजातीय विद्रोहों की प्रकृति को हम दो चरणों में बांटकर देख सकते हैं-

1. **1857 के विद्रोह के पहले**
2. **1857 के विद्रोह के बाद**

1. **1857 के विद्रोह के पहले–** इस समय के विद्रोह अपने सीमित क्षेत्रों में, अपने अधिकारों की रक्षा व बाहरियों (दिकुओं) को अपने क्षेत्र से निकालने के लिए किया गया। जैसे - हो, कोल, अहोम, खासी जनजाती आदि।
   - **नेतृत्व की कमी :-** सुनियोजित एवं सुसंगठित नेतृत्व का अभाव के कारण विद्रोह को आसानी से कुचल दिया जाता था। जैसे- हो विद्रोह ।
   - **अप्रगतिशीलता :** विद्रोहों का मूल उद्देश्य उनके पारंपरिक व्यवस्था एवं सांस्कृतिक मान्यता पर आधारित था। इसमें उन्होंने किसी प्रगतिशील एवं नवविचार की माँग नहीं की।

✦ **1857 के विद्रोह के बाद**

1. **विद्रोह के दृष्टिकोण में परिवर्तन :-** 1857 ई. के विद्रोह के बाद जनजातियों को अंग्रेजो की कूटनीति समझ में आयी तथा जमींदारों- सूदखोरों दिकूओ के गठजोड़ को समझा।
2. **धार्मिक दृष्टिकोण :-** जनजातियों के विद्रोह के प्रति एकजुटता एवं निष्ठा का भाव बनाए रखने के लिए धार्मिक दृष्टिकोण का सहारा लिया गया।
   जैसे- विद्रोह को द्रुतगामी गति देने के लिए बिरसा मुण्डा ने स्वयं को धरती आबा एवं उत्थान के लिए धरती पर अवतरित किया।
3. **अद्वितीय पहचान :-** वे अपनी अद्वितीयता बनाये रखना चाहते थे। अपनी पारंपरिक व्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था, धार्मिक मान्यता, आर्थिक स्थिति में किसी दिकूओं का प्रवेश या हस्तक्षेप नहीं चाहते थे।
4. **सामाजिक सुधार:-** जनजातीय व्यवस्था में व्याप्त कुरीतियों (जैसे- मद्यपान, पशुबल, बहुदेववाद, अनैतिकता आदि) को त्याग कर एकजुटता का प्रयास किया गया। जैसे:- मुण्डा विद्रोह में आंतरिक शुद्धिकरण पर जोर तथा एकेश्वरवाद के लिए 'भिबींगा' के प्रति आस्था की बात कही।
5. **आंदोलन का उग्र एवं हिंसात्मक होना :-** जनजातियों द्वारा परंपरागत हथियारों (तीर, धनुष, भाला आदि का प्रयोग करते हुए आंदोलन को उग्र एवं हिंसात्मक तरीकों को अपनाया। इससे विद्रोह को आसानी से कुचल दिया गया।
6. **स्वतंत्रता आंदोलन में सहयोग :-** जनजातीय विद्रोह स्थानीय क्षेत्रों में ज्यादा सीमित था। फिर भी बाद में स्वतंत्रता आंदोलन में सहयोग मिला। जैसे:- तानाभगत द्वारा असहयोग आंदोलन में सहयोग और विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार में भी ताना भगत शामिल थे।

इस उपरोक्त बिन्दुओं की समीक्षा से हम पाते है कि जनजाती विद्रोह अपने मूल उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर सका परंतु औपनिवेशिक शासन प्रणाली में अमूल-चूल परिवर्तन किये। जनजातियों के लिए अलग कानून बनाया गया एवं संरक्षित क्षेत्र घोषित किया गया तथा कई इतिहासकार जैसे- कार्ल्स मार्क्स, टैगोर तथा अन्य प्रमुख लेखकों ने अपनी कृति में इन्हें स्थान दिया ।

●●●